अरस्तु का अनुकरण सिद्धांत

हिन्दी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष, पत्र-6

'अरस्तु' प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक प्लेटो का शिष्य थे | पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में 'अरस्तु' का महान योगदान है | वह सिकंदर महान के गुरु के रूप में विख्यात हैं |

'अनुकरण' शब्द यूनानी भाषा के 'मीमेसिस' (Mimesis) शब्द का हिन्दी पर्याय है | वस्तुतः हिन्दी में यह शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Imitation' से रूपांतरित होकर आया है | अरस्तु से पूर्व प्लेटो ने अनुकरण सिद्धांत का विवेचन किया और यह स्थापित किया कि काव्य त्याज्य है, क्योंकि ईश्वर ही सत्य है, इसकी अनुकृति संसार करता है और संसार की अनुकृति काव्य है | इस प्रकार काव्य अनुकरण का अनुकरण है | दूसरे शब्दों में - अनुकरण सदैव अधूरा होता है | अतः संसार अर्द्धसत्य है और काव्य चौथाई सत्य है अर्थात् तीन-चौथाई झूठ है इसलिए त्याज्य है |

वस्तुतः कवि या कलाकार अपनी संवेदना और अनुभूति से अपूर्णता को पूर्णता प्रदान करता है और उसे आदर्श रूप देता है | अतः अनुकरण को मात्र नकल नहीं कहा जा सकता | अनुकरण सिद्धांत से इतिहासकार और कवि का भेद स्पष्ट हो जाता है | इतिहासकार तो उसका वर्णन करता है जो घटित हो चुका है किंतु कवि उसका वर्णन करता है जो घटित हो सकता है | इसलिए काव्य का रूप अपेक्षाकृत अधिक भव्य है |

अरस्तु के अनुसार कवि वस्तुओं को यथास्थित रूप में वर्णित नहीं करता अपितु उनके युक्तियुक्त (तर्कपूर्ण) संभाव्य रूप में वर्णित करता है | इस प्रकार की मानव जीवन के स्थाई तत्व की अभिव्यक्ति के लिए वस्तु के सत्य

का बलिदान भी कर सकता है और उसमें परिवर्तन भी कर सकता है | वह मानव के कार्य ही नहीं अपितु उसके भाव, विचार, चरित्र, आदि में कल्पना के अनुरूप परिवर्तन कर लेता है | काव्य में जिस मानव का चित्रण होता है वह सामान्य से अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी अथवा यथार्थ भी हो सकता है | वस्तुतः कवि हृदय के आनंद के लिए यह परिवर्तन करता है, क्योंकि ऐसा करने से कवि को आनंद मिलता है |

अरस्तु के अनुसार अनुकरण का विषय जीवन के बाह्य पक्ष नहीं है, अपितु इसका प्रभाव क्षेत्र अन्तर्जगत तक व्याप्त है | अरस्तु के लिए 'वस्तु कैसी है' की अपेक्षा 'वस्तु कैसी होनी चाहिए' पर अधिक बल देते हैं |

आवश्यक निर्देश - समस्त विद्यार्थीगण को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह अन्य पाठों का भी अध्ययन कर पाठ के मूल भाव को समझें । उससे संबंधित प्रश्न उत्तर का अभ्यास करें। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत पाठ्य सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य ,लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं जिसका अध्ययन विद्यार्थियों के लिए अति आवश्यक है ।

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी विभाग

नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय